प्रक्रिया सामूहिक पैमाने पर होती है, तो इसे 'जनसंचार' कहते हैं। जनसंचार का उद्देश्य जानकारी या विचारों को समाज के उन तमाम लोगों तक पहुँचाना है, जो इनसे सम्बन्ध रखते हैं अथवा जिनके लिए यह जानकारी पहुँचाना आवश्यक है, ताकि सभी लोग उस जानकारी से अवगत हो जायें, उससे लाभ उठा सकें।

जनसंचार में प्रेषक (स्रोत) तथा बड़ी संख्या में ग्रहणकर्ताओं के बीच एक साथ संपर्क स्थापित होता रहता है। इसमें इस बात की संभावना बनी रहती है कि सूचना या जानकारी प्राप्त करने वाले लोगों में से अधिकांश में कुछ प्रतिक्रिया अवश्य उत्पन्न होगी। जनसंचार के लिए समाचार-पत्र, रेडियो, टेलीविजन, फिल्म जैसे माध्यमों की आवश्यकता होती है, जो बड़ी संख्या में पाठक, श्रोता अथवा दर्शकों को प्रभावित करते हैं एवं उनकी रूचि के अनुकूल होते है।

प्रश्न 2. विभिन्न जन माध्यमों पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

उत्तर—

जन माध्यम (Mass Media)

'जन-माध्यम' जनसंचार-माध्यम हैं, जिन्हें संक्षेप में केवल 'मीडिया' (media) कह दिया जाता है। आज 'मीडिया' शब्द संपूर्ण 'पत्रकारिता' के लिए प्रयुक्त होने लगा है।

शब्दार्थ की दृष्टि से शब्द का अर्थ है, "बड़ी संख्या में लोगों के साथ संप्रेषण का मुख्य साधन या माध्यम, विशेषरूप से टेलीविजन, रेडियो और समाचार-पत्र।"

यह 'माध्यम' (medium) का बहुवचन है। 'माध्यम' का सामान्य अर्थ है, "वह साधन जिससे कुछ अभिव्यक्त अथवा संप्रेषित किया जाए।"

'जनसंचार' के प्रसंग में हम देख चुके हैं कि मानव-समाज के सभी मिले जुले वर्गों तक बड़े पैमाने पर, चाहे वे पास हों या दूर, कुछ विचार, भाव, सूचनाएँ या जानकारी संप्रेषित किये जाते हैं। ये विचार, भाव, सूचनाएँ या जानकारी, 'संचार' के क्षेत्र में 'सार्थक संदेश' माने जाते हैं। इनके संप्रेषण के लिए, कुछ साधनों या उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। ये साधन/उपकरण 'माध्यम' कहलाते हैं। इस प्रकार जनसंचार में जहाँ 'सार्थक संदेशों' का महत्त्व है, वहीं संचार-साधनों अथवा माध्यमों का भी विशेष महत्त्व है। उनके अभाव में संचार-प्रक्रिया असंभव है। 'माध्यम' कोई भी हो सकता है। शर्त एक ही है कि वह आपसी समझदारी के उद्देश्य की पूर्ति करता हो। भाषा पहला विकसित माध्यम है, जिसने संचार को व्यवस्थित रूप प्रदान किया।

'संचार' के दायरे में अभिव्यक्ति के सभी रूप आ जाते हैं। एक चींटी से लेकर हाथी तक सृष्टि के सभी प्राणी किसी न किसी रूप में आपस में 'संदेशों' का आदान-प्रदान करते हैं। यह अलग बात है कि उनमें बहुत से 'संदेश-संकेतों' को हम समझ नहीं पाते। लेकिन इतना अवश्य है कि सृष्टि के सभी प्राणियों में संकेत, संचार-प्रणाली अथवा 'कोड्स-पद्धति' समान है। इसका कारण यह है कि मनुष्य हो या कोई अन्य प्राणी, सभी अपने संदेश या सूचना को प्रभावपूर्ण तरीके से व्यक्त करना चाहते हैं। रंग, गंध, शब्द, ध्वनि, स्पर्श, शरीर के विभिन्न अंगों-द्वारा किये जाने वाले संकेत, हाव-भाव और विभिन्न मशीनों-उपकरणों द्वारा भेजे जाने वाले संकेत ..... यह एक लम्बी सूची है, जो 'संचार' के 'माध्यम' बनाती है। 'जन-माध्यम' संचार की प्रक्रिया को बड़े पैमाने पर एकसाथ घटित करते हैं।

आधुनिक समय में प्रचलित 'जन-माध्यम' मुख्य रूप से तीन वर्गों में रखे जा सकते

सामुदायिक विकास कार्यक्रम तैयार करने के लिए शुरू किया जाना था। उस समय इन प्राथमिक उद्देश्यों को ध्यान में रख कर संयुक्त राज्य अमेरिका सरकार और यूनेस्को के सहयोग से आकाशवाणी भवन में एक लघु टेलीविजन स्टूडियो की स्थापना की गई। यूनेस्को ने टेलीक्लबों के सदस्यों को दिल्ली-द्वार निर्मित तथा प्रसारित कार्यक्रम देखने के लिए निःशुल्क सेट प्रदान किये। ये आरम्भिक कार्यक्रम उत्साहवर्द्धक सिद्ध हुए और 1961 में उच्चतर विद्यालयों के लिए एक नियमित स्कूल टी.वी. कार्यक्रम शुरू हुआ। यूनेस्को के विशेषज्ञ डॉ. पॉल न्यूराथ ने इन कार्यक्रमों तथा इन कार्यक्रमों के स्कूली बच्चों पर प्रभाव का मूल्यांकन किया। परिणाम उत्साहवर्द्धक रहा। सन् 1955 में सरकार जनता की माँग और अनुकूल परिणामों से उत्साहित हो कर इस बात से सहमत हुई, कि शिक्षा के साथ-साथ मनोरंजन तथा सूचना-कार्यक्रम शुरू किये जायें। यानी, अब शिक्षा तथा सामुदायिक विकास के आरम्भिक उद्देश्य के अलावा मनोरंजन एवं सूचना का उद्देश्य भी जुड़ गया। बाद में तो कई तरह के कार्यक्रम तैयार हुए और पर्याप्त लोकप्रिय हो गये। आज तो स्थिति बिल्कुल भिन्न है। टेलीविजन कार्यक्रमों का कायापलट ही हो चुका है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि भारत में सबसे पहले टेलीविजन से समाचार बुलेटिन 15.8.65 को प्रसारित हुआ था। इसके बा लगातार इसके समय तथा बुलेटिनों की संख्या बढ़ती चली गई।

1 अप्रैल, 1976 से हमारे यहाँ टेलीविजन "दूरदर्शन" नाम से आकाशवाणी से पृथ होकर स्वतन्त्र अस्तित्व में आ गया है। आज तो इसके 8 चैनल हैं। अपने दूरदर्शन के अला सैटेलाइट के जरिए स्टार टी. वी., जी. टी. वी. एम और अब वी. टी. वी. बी. बी. सी., एल. टी. वं पी. टी. वी., जी. सिनेमा, स्टार मूवीज, सोनी टी. वी., ए. टी. एन., ई. एस. पी. एन. इन. दिल्ली, अ टी. पी., होम टी. वी. इत्यादि-इत्यादि का जाल फैल चुका है। अब शीघ्र ही डिज्नी चैनल एशियाई देशों के लिए शुरू होगा। पूरा, देश इन चैनलों से अपने घर को संगीत, फि समाचार, धारावाहिक, नाटकों, ज्ञानवर्द्धक वृत्तचित्रों इत्यादि से गुंजा रहा है। रंग-बि देशी-विदेशी दृश्यों, बिम्ब और संगीत-लहरों से बहुत बड़ी जनसंख्या अपने आपको आ कर चुकी है। शिक्षा का उद्देश्य पीछे रह गया है। इनसेट-1 बी ने इस दिशा में बहुत बड़ी क्र कर दी है।

इस 'टेलीविजन-विस्फोट' से नई सूचना-क्रांति घटित तो हुई है, लेकिन पत्रकारिता जिम्मेदारी भी बढ़ गई है। हमारे देश का 'दूरदर्शन' लोकप्रिय होने के प्रयत्न में सस्ते मनो की ओर झुक रहा है, इस बात को लेकर पत्रकारिता-जगत् में चिन्ता होना स्वाभाविक वास्तव में 'दूरदर्शन' को (अपने 'दूरदर्शन' को ही क्या सभी देशों के दूरदर्शन को) कार्यक्रमों का निर्माण करना चाहिए जो सूचना-परक हों, मनोरंजन ढंग से जन-सामान्य शिक्षित कर सकें और जो बुद्धिमत्ता के साथ मनोरंजन प्रदान कर सकें। हमारे दूरदर्श सारित होने वाले कार्यक्रमों को दो वर्गों में रखा जा सकता है। (1) ऐसे कार्यक्रम जि च्चरित शब्द (Spoken word) का महत्त्व सर्वोपरि है, और (2) ऐसे कार्यक्रम जिनमें वं मनोरंजन ही एकमात्र लक्ष्य है।

प्रथम वर्ग के कार्यक्रमों में हैं—समाचार (news), वार्ता (talk or discussi क्षात्कार (interview), रिपोर्ट, नाटक (Play), परिचर्चा (Pannel discussion) रूप चर (feature), कमेंटरी/खेल आदि का आँखों देखा प्रसारण (live tel mmentary), वृत्तचित्र (documentary film), कवि सम्मेलन और मुशायरा, यू. सी. आर. टी. के शिक्षण कार्यक्रम इत्यादि।

अनुवाद : सिद्धान्त एवं व्यवहार

अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र, प्रक्रिया एवं प्रविधि

प्रश्न 1. अनुवाद की परिभाषा देते हुए इसके क्षेत्र प्रक्रिया एवं प्रविधि की उदाहरण सहित विवेचना कीजिए ?

उत्तर—भाषा का जन्म व्यक्तियों में आपसी विचार-विनिमय के प्रयत्न से हुआ तो अनुवाद का जन्म दो भाषा-भाषी व्यक्तियों या समुदाय में विचार-विनिमय संभव बनाने के लिए। अतः अनुवाद एक ऐसी प्रक्रिया है जो भाषाओं पर लागू होती है अर्थात एक भाषा की पाठ्य-सामग्री को दूसरी भाषा में प्रयुक्त करना अनुवाद है।

वैसे तो अनुवाद की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है लेकिन आज के समाज के बहुभाषी होने के कारण इसका महत्त्व और बढ़ गया है। आधुनिक समाज में विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति होने के कारण इसकी अधिकाधिक आवश्यकता महसूस की जा रही है। साहित्य के अतिरिक्त अब विज्ञान, विधि, प्रशासन, बैंकिंग आदि में इसके महत्त्व को समझा जा रहा है। केवल यही नहीं, शिक्षा और नागरी परिवेश ने प्रत्येक व्यक्ति को बहुभाषी बना दिया है जिसके कारण उसे स्वयं अनुवादक (चाहे अनजाने रूप में) बनना पड़ रहा है। इस प्रकार आज अनुवाद की महत्ता बढ़ती जा रही है।

अनुवाद का अर्थ, परिभाषा और क्षेत्र

अनुवाद शब्द 'अनु' और बाद के जोड़ से बना है। 'अनु' का अर्थ है पीछे या बाद में और 'बाद' का अर्थ है बोलना या कहना। अतः अनुवाद का मूल अर्थ है 'पुनःकथन' या 'किसी के कहने के बाद कहना'। बाद में यह अर्थ संकीर्ण होते हुए "एक भाषा की पाठ्य-सामग्री का दूसरी भाषा में रूपांतरण" अनुवाद माना गया।

अनुवाद सदैव स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा की ओर निष्पादित होता है। यह जरूरी नहीं कि स्रोत भाषा की पाठ्य-सामग्री का अंतरण लक्ष्य भाषा में पूर्ण रूप से हो। वास्तव में दो भाषाओं के अनुभव की उपलब्धि और अभिव्यक्ति पूर्णतया एक प्रकार से नहीं होती, इसीलिए 'पूर्ण अनुवाद' नहीं हो पाता बल्कि 'लगभग अनुवाद' हो पाता है। इस प्रकार प्रत्येक स्तर पर—अर्थ के स्तर पर या व्याकरण के स्तर पर—अनुवाद की अपनी सीमा होती है और वह चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो, मूलकृति के समान नहीं हो सकता। इस प्रकार अनुवाद की परिभाषा इस प्रकार की गई है, "एक भाषा में व्यक्त भावों या विचारों को दूसरी भाषा में समतुल्यता के आधार पर सहज रूप से व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है।"

अनुवाद की प्रक्रिया

अनुवाद प्रक्रिया के तीन सोपान माने गये हैं—पहला, स्रोत भाषा का पाठ विश्लेषण दूसरा, अंतरण और तीसरा, पुनर्रचना। यह बात अवश्य है कि कुशल और अभ्यास अनुवादक

गुआना) भेज दिया गया है। यह दूर-संवेदी उपग्रह पाँच जून 1997 को प्रक्षेपित किया जायेगा। इसकी अगली कड़ी के रूप में इनसेट- 2 E को अगले वर्ष प्रक्षेपित किये जाने की तैयारी चल रही है।

प्रश्न 5. टिप्पणी लिखिए। इंटरनेट और नव इलैक्ट्रॉनिक समाचार-पत्र।

उत्तर— **इंटरनेट और नव इलैक्ट्रॉनिक समाचार-पत्र**

धीरे-धीरे हम 'इंटरनेट' के माध्यम से नव इलैक्ट्रॉनिक समाचार-पत्र की ओर बढ़ रहे हैं। उपग्रहों और कम्प्यूटर की संचार-क्रांति ने साधारण अखबारों के अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है। मीडिया-विशेषज्ञ अब यह कहने लगे हैं कि भविष्य में समाचार-पत्र छपेंगे नहीं, कम्प्यूटर के परदे पर पढ़े जायेंगे। और अब यह धारणा साकार होने लगी है।

छापाखाना के आविष्कर्त्ता जोहानेस गुटेनबर्ग (1455) ने कभी यह सोचा भी नहीं होगा कि उनकी मुद्रण मशीन का यह हश्र होगा! हमारे देश में भले ही अभी शुरूआत हो रही है, विकसित देशों में तो 'इलैक्ट्रॉनिक न्यूजपेपर' की अच्छी शुरूआत हो चुकी है। स्टार टीवी के मालिक रूपर्ट मरडॉक ने कुछ वर्ष पूर्व सवा करोड़ डॉलर में डेल्फी इंटरनेट सर्विसेज को खरीद कर फिलहाल कुछ हजार घरों में हलचल मचा दी है! मरडोक ने 'ब्रिटिश टेलीकॉम एण्ड

। इन लोक-संचार-माध्यमों में हम लोक गीत, लोक नृत्य, नृत्य नाटिका, लोकनाट्य, लोक-कला के विविध रूप तथा मौखिक परम्परा के रूप में चली आ रही लोक गाथाओं त्यादि की गणना की जा सकती है। ये लोक माध्यम आम जनता का धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवनधारा के अभिन्न अंग हैं। आधुनिक सभ्यता से कटी हुई, प्रायः निरक्षर जनता बीच ये माध्यम लम्बे समय से प्रचलन में रहे है और उसे विश्वसनीयता के साथ प्रभावित करते रहे हैं।

प्राचीन परम्परागत लोक-संचार माध्यमों का आविष्कार मनुष्य-समाज ने अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप किया। इनको समूहों ने जन्म दिया। सच तो यह है कि ये हमारी ग्राम्य संस्कृति की देन हैं। ग्रामीण जनता के बीच विकसित ये माध्यम आज भी समाज के साथ तादात्म्य करने में सक्षम है। उल्लेखनीय है कि उन्नीसवीं तथा बीसवीं शताब्दी में विदेशी प्रभुत्व के विरोध में छेड़ा गया स्वतन्त्रता-संघर्ष इन लोक-माध्यमों के विविध कलारूपों (यथा—गीत, नृत्य, कथा-वाचन, कठपुतली एवं लोक-नाट्य आदि) के रचनात्मक प्रयोग से प्रेरित था। इनके प्रयोग से उस ऐतिहासिक संघर्ष को व्यापकता मिली थी। ये कला रूप आज भी हमारे ग्रामीण क्षेत्रों में जन-जागरण के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। मद्यपान, नशा, निरक्षरता, अस्पृश्यता, अंधविश्वास, सांप्रदायिकता, जनसंख्या विस्फोट, अस्वच्छता, कुपोषण, दहेज तथा सती प्रथा इत्यादि सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध जन-जागृति पैदा करने में इन लोक माध्यमों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। यहाँ तक कि आज के अत्याधुनिक नये इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों के बीच भी ये परम्परागत प्रदर्शनात्मक लोक-माध्यम अत्यन्त लोकप्रिय हैं। इनके प्रति व्यापक आकर्षण है और इनका प्रभाव त्वरित होता है। इसका मुख्य कारण है कि इनके अन्दर मनुष्यमात्र की गहनतम संवेदनाओं को छूने की क्षमता है। निस्सन्देह ये माध्यम हमारे सांस्कृतिक सद्भाव को बढ़ाने में अद्वितीय योगदान दे सकते हैं।

पत्रकारिता से जुड़े जन-संचार माध्यम

हमारे परम्परागत लोक-संचार माध्यम भी किसी न किसी रूप में पत्रकारिता से जुड़े हुए हैं। यहाँ तक कि उनमें से ही पत्रकारिता के जन्म और विकास के बीज तलाशे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए हम पुराने समय में डुग्गी पीट कर ऐलान करने वाले आदमी को लें। वह सत्ता की ओर से जरूरी सूचनाएँ जनता को देता था। उसका यह कार्य (मुनादी) जन-संचार माध्यम और पत्रकारिता के आरम्भिक चरण का एक अंश है। आधुनिक युग से पूर्व विचार प्रेषण में देश, काल और माध्यम-तीनों दृष्टियों से बाधाएँ थीं। दूरी अधिक होने से संदेश देर से पहुँचता था। माध्यम सीमित और सुस्त थे। माध्यम की सीमित क्षमता के कारण संदेश प्रभावित भी हो जाता था। बदल जाता था। उसे सुरक्षित भी नहीं रखा जा सकता था। आज स्थिति बहुत अच्छी है।

यहाँ हम पत्रकारिता से जुड़े आधुनिक जन-संचार माध्यमों की बात कर रहे हैं। ये जन-संचार-माध्यम आज सम्पूर्ण पत्रकारिता जगत् की सेवा में संलग्न हैं। अभी तक केवल मुद्रित जन-माध्यम (समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, जर्नल, पुस्तकें अथवा पम्फलेट इत्यादि ही पत्रकारिता के संवाहक थे; किन्तु अब रेडियो को भी पीछे छोड़ते हुए टेलीविजन, कम्प्यूटर आदि नव इलैक्ट्रॉनिक माध्यम भी पत्रकारिता से व्यापक स्तर पर जुड़ चुके हैं। ये सीधे हमारे दीवानखाने तथा शयनकक्ष में जाकर सारी दुनिया को हमारे पास ले आये हैं। जैसे-जैसे इन संचार माध्यमों का विकास होता जा रहा है, उनका महत्त्व भी बढ़ता जा रहा है और स्वाभाविक

समाचार-पत्र निकालने से अलग हुए। अलग तो वे मुख्य रूप से विदेशी समाचारों के कुछ समाचार-पत्रों के लिए थोड़े-थोड़े संवाददाता की भी स्थान देना शुरू कर दिया। वे बहुत जल्दी ही बड़ों की और जिसे साधारण आर्थिक के लिए बड़ों से अलग कर दिया। अब निर्धारित दैनिक समाचार-पत्र निकालने के लिए सर्वथा उपयुक्त थी अतः इस तरह। यह है वे समय का पहला दैनिक Daily Courant जनवरी से आया।

[illegible] समाचारों से सुरक्षा तथा शुद्ध व्यवस्था की निष्पक्षता में सुधार लाया गया। वे छोटे से छोटे समाचार इकट्ठा करते तथा समाचार-पत्र के निर्धारित पृष्ठ विशेष से सम्बन्ध है। सुरक्षा समितियों के लिए अब पंचवर्षीय एक आजीविका बन गया, क्योंकि पहले उनके लिए [illegible] था। इस तरह आगे आने वाले यूरोप और अमेरिका में समाचार-पत्र जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुका था।

शासकों ने समाचार-पत्रों पर कड़ी निगरानी शुरू कर दी। शासन जिस सत्ता की निगरानी चाहता था और चाहता था कि समाचार-पत्र उनको न छापें, उसके बल विशेष रूप से सामान्य निगरानी के समाचार-पत्रों को महत्वपूर्ण नजरों से देखना शुरू कर दिया। शासकों के प्रतिनिधि ने संपादकों को खुलेआम सूचना देना या लालच देना शुरू कर दिया। जो संपादक इस लालच में नहीं देते या निर्धारित की हुकुमी नहीं की उनको जेल भेज दिया गया और कभी बंद कर दिया गया। अधिकांश देशों में कोई समाचार-पत्र बिना लाइसेंस के नहीं निकाला जा सकता था। यहाँ तक कि जो सरकारें सशस्त्र नहीं थीं, वह भी इस निष्कर्ष की थीं कि केवल कुछ विशेषज्ञ लोगों को ही सार्वजनिक गतिविधियों से मतलब रखना चाहिए। सरकार ने विशेषकर से इंग्लैण्ड में, समाचार-पत्र की एक-एक प्रति पर भारी टैक्स लगा कर उसके प्रसार को सीमित कर दिया। यहाँ तक कि 1815 ई. में *The Times of London* जैसे अखबार की भाग 5000 प्रतियाँ प्रतिदिन निकलती थीं, जो पूरी दुनिया में अद्वितीय था। इसका विज्ञापनमूल्य 7 शिलिंग था, जिसमें से 4 शिलिंग टैक्स था।

[illegible] शताब्दी में पश्चात् में समाचार-पत्रों की स्थिति में भारी परिवर्तन आया। राजनीतिक स्वतंत्रता एक नियम बन गया। देश से टैक्स हटा लिये गये। समाचार-पत्र कार्यालयों में समाचार टेलीफोन और टेलीफोन के जरिए बड़ी तीव्र गति से पहुँचने लगे। छपाई भी कहीं अधिक तीव्र गति होने लगी और टेलपार्ट से समाचार-पत्र सुदूर कस्बों तथा गाँवों तक पहुँचने लगे। विकसित मशीनों से जंगल काट कर भारी मात्रा में अच्छा और सस्ता कागज तैयार होने लगा। इंग्लैण्ड और अमेरिका में समाचार-पत्रों को विज्ञापन भी मिलने लगे। इन सब कारणों से इस कालखण्ड में समाचार-पत्र पढ़ने की अपेक्षा कहीं अधिक सस्ते हो गये तथा भारी संख्या में निकलने लगे। अधिकांश पत्रों ने अपनी कीमतें घटा दीं ताकि मजदूर-वर्ग के लोग तो नहीं, हाँ, मध्य तथा दूसरी वर्ग तक के लोग उन्हें खरीद कर पढ़ सकें। समाचार-पत्र सस्ते अवश्य थे, किन्तु उनका स्वर गम्भीर था। उनमें प्रकाशित होने वाले लम्बे-लम्बे विश्लेषणात्मक लेख पढ़े-लिखे अच्छे-अच्छे लेखकों द्वारा लिखे जाते थे। उन्हें गम्भीर लोग रुचिपूर्वक पढ़ते थे। धीरे-धीरे एक नयी शैली अपनाई जाने लगी। समाचार-पत्र तारों से आने वाले लम्बे-लम्बे समाचारों का पुनर्लेखन कर, उन्हें सरल, आदर्श सुगठित और छोटे रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा। बड़े शीर्षक दिये जाने लगे। समाचारों के अलावा रपटों, कथाओं तथा व्यक्तिगत साक्षात्कारों को भी जगह देना शुरू कर दिया। मूल्य कम कर दिया गया, ताकि गरीब लोग भी खरीद कर पढ़ सकें। अब समाचार-पत्रों की पाठकी एक नई पीढ़ी पैदा हो गई।

बहरहाल, अब हम एक-एक कर पत्रकारिता से जुड़े प्रमुख आधुनिक जन-संचार-माध्यमों पर विचार करते हैं।

प्रश्न 3. जनसंचार के मुद्रण माध्यम कौन से हैं ? विवेचना कीजिए ?

उत्तर—

मुद्रण-माध्यम

संचार के जन-माध्यमों में मुद्रण-माध्यम अन्य आधुनिक जन-माध्यमों की अपेक्षा सबसे प्राचीन है। मुद्रण के अन्तर्गत समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, जर्नल, पुस्तकें इत्यादि शब्द माध्यम आते हैं। ये लिखित माध्यम आज भी अन्य आधुनिक जन-संचार माध्यमों की अपेक्षा अधिक विश्वसनीयता रखते हैं। इनकी प्रामाणिकता में जनता इसलिए भी भरोसा करती है, क्योंकि रेडियो तथा टेलीविजन जैसे संचार-माध्यमों पर सरकारी नियंत्रण है। मुद्रण-माध्यम उनकी अपेक्षा अधिक स्वतन्त्र हैं, क्योंकि वे स्व-शासित हैं।

विश्व के प्रायः सभी विकसित एवं विकासशील देशों में लगभग प्रत्येक पढ़ा लिखा व्यक्ति दैनिक समाचार पढ़ता है, यहाँ तक कि ऐसा व्यक्ति भी जिसने कायदे से कभी कोई पूरी किताब भी नहीं पढ़ी हो, वह भी। एक समाचार-पत्र का पहला और मुख्य कार्य है समाचारों का मुद्रण। यह कार्य इतनी पूर्णता एवं तीव्र गति से होता है, जिसकी एक शताब्दी वर्ष पूर्व कल्पना भी नहीं की जा सकी थी। एक समाचार-पत्र का कार्य इतना ही नहीं है कि वह तीव्र गति से समाचार मुद्रित कर लोगों तक पहुँचाए। इससे भी आगे समाचार-पत्र का काम है जिस समाज में यह प्रसारित होता है, उस समाज की परिवर्तनशीलता की विश्वसनीय ढंग से पूरी तस्वीर सामने लाना। इसलिए आज बिना समाचार-पत्र के हम किसी आधुनिक समाज या शहर की कल्पना कर ही नहीं सकते।

समाचार-पत्र किसी समुदाय की रचना तो नहीं करते, किन्तु वे उस समुदाय की सीमाओं का निर्धारण एवं उसकी एकता को अवश्य बनाये रखते हैं। वे सामान्य रुचि तथा आचरण को बढ़ावा देते हैं विशेषकर ऐसे समाज में जहाँ एक ही समाचार-पत्र पढ़ा जाता हो । इसी तरह एक स्थानीय अखबार किसी कस्बे अथवा जनपद की पहचान, उसकी अस्मिता की भावना सुरक्षित रखने में सहायता करता है और व्यापक दृष्टि से एक समाचार-पत्र हजारों किलोमीटर दूर घटने वाली हल्की-फुल्की अथवा मानवीय करुणा, शोक इत्यादि की घटनाओं के समाचारों के माध्यम से आधुनिक विश्व को एकता के सूत्र में भी बाँधता है। जबकि प्राचीन समय में हम इस तरह की घटनाओं को अफवाहों के रूप में महीनों बाद सुन पाते थे।

इस प्रश्न का कोई सीधा-सरल उत्तर नहीं दिया जा सकता कि 'समाचार-पत्र क्या है ?' और 'इसके क्या कर्तव्य हैं ?' लेकिन हम समाचार-पत्रों के इतिहास-विकास के क्रम में इन प्रश्नों के सांकेतिक तथा विविध आयाम वाले उत्तर प्राप्त कर सकते हैं।

समाचारों को बिक्री के लिए वितरण करने की निश्चित तिथि तो ज्ञात नहीं है, किन्तु यह पुनर्जागरण काल से मानी जाती है। जैसे-जैसे शहरों का विकास हुआ और यूरोप में व्यापार का फैलाव हुआ, लोगों को आवश्यकता अनुभव होने लगी कि सुदूर स्थानों पर क्या हो रहा है, इसकी जानकारी उन्हें मिलती रहे। लेकिन जो मुद्रक थे (जो कि पहले पत्रकार हैं), वे कभी-कभी जाने वाले यात्रियों के माध्यम से समाचार-सूचनाएँ भिजवाते थे और अपने ग्राहकों को 'समाचार चौपन्ने' (News pamphlets) देते थे। ये 'समाचार चौपन्ने' अनियतकालीन थे और कभी-कभी ही पहुँचते थे। सन् 1622 में लन्दन में एक दर्जन मुद्रक थे, जिन्होंने निरीपित रूप से पत्रों के आदान-प्रदान का सिलसिला शुरू किया और इस प्रकार वे साप्ताहिक

बहुत जरूरी है। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी का "कम्युनिकेशन" शब्द साहित्यिक भाषा में अभिव्यंजना, संलाप, संदेश, संप्रेषण, प्रभाव, संचार, बात पहुँचाना आदि विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त होता है जबकि वैज्ञानिक भाषा में संप्रेषण या संचार के अर्थ में प्रयुक्त होता है। इसी प्रकार अंग्रेजी के Prerogative, Privilege, Right शब्द सामान्य भाषा में एक ही अर्थ में प्रयुक्त होते हैं जबकि विधि या संविधान की भाषा में इन तीनों के अलग-अलग निश्चित अर्थ हैं।

2. **अंतरण**—दो भाषाओं की अर्थगत संरचना की अभिव्यक्तियाँ अंतरण के क्षेत्र में एक-दूसरे से टकराती हैं। हर भाषा की अपनी संरचना होती है और अपना भाव-जगत होता है। उन्हें एक-दूसरे की शाब्दिक संरचनाओं से बाँधना कठिन होता है। उनका अपना अर्थ-संसार होता है। अनुवाद करते समय कुछ सूचनाओं का ह्रास हो जाता है और कुछ में अतिरिक्त योगदान हो जाता है। उदाहरण के लिए, यदि हिन्दी के 'चाचा' शब्द का अनुवाद अंग्रेजी में Uncle किया जाय तो इसमें चाचा, मामा, फूफा, मौसा, ताऊ का अतिरिक्त योग रहता है। इसी प्रकार रूसी भाषा में 'स्पुतनिक' शब्द के कई अर्थ हैं, जैसे—सहयात्री, ग्रह, साथी और कृत्रिम उपग्रह। 1957 में रूस ने जब अपना उपग्रह चाँद की ओर उड़ाया था तो वह केवल एक निश्चित अर्थ के रूप में अन्य भाषाओं में अनूदित होने लगा है। इसी प्रकार दोनों भाषाओं में सांस्कृतिक और सामाजिक भेदों को देखना होता है, जैसे—कर्म, गंगाजल, संस्कार आदि। न केवल यही, शब्द-समूह के अर्थ का अंतरण करते हुए उनके संयोजन से उत्पन्न अर्थ को भी देखने की आवश्यकता रहती है। जैसे, Acid test (अग्नि परीक्षा), Environmental handicaps (परिवेशजन्य सीमाएँ), Demand loan (अविलंब ऋण) आदि।

इस समस्या को समतुल्यता के आधार पर देखा जा सकता है। यह समतुल्यता अर्थ और अभिव्यक्ति के धरातल पर होगी। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत वाक्य-संरचना, पदबंध-संरचना, शब्द-संयोजन, अक्षर-निर्माण, ध्वनि-व्यवस्था आदि का अर्थ समतुल्यता के आधार पर अंतरण किया जायेगा। वास्तव में अनुवाद में अंतरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें स्रोत भाषा रूपी डिब्बे में संयोजित सामग्री को लक्ष्य भाषा रूपी डिब्बे में उसी प्रकार व्यवस्थित रूप में संयोजित करना है।

3. **पुनर्रचना**—लक्ष्य भाषा के नियमों में संदेश को पुनः व्यवस्थित और संयोजित करना होता है ताकि वह संप्रेषणीय बन सके। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप मूल और अनूदित पाठों के बीच समतुल्यता का सम्बन्ध स्थापित होता है। किन्तु यह समतुल्यता रूपपरक अर्थात भाषापरक नहीं होती वरन् संदर्भपरक होती है। इसका अभिप्राय यह है कि स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के विभिन्न व्याकरणिक पैटर्नों, पूर्ण अर्थों और प्रकार्यों को शब्द के एक-दूसरे के अनुरूप होना न होना उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है जितना संदर्भ का होना आवश्यक है। स्रोत भाषा के अर्थ के लिए लक्ष्य भाषा में समतुल्य अर्थ का चयन करते समय शब्द या वाक्य की सीमा के ऊपर उठकर पाठ के स्तर पर भी जाना पड़ता है। घटकों के व्याकरणिक सम्बन्ध, उनके संदर्भपरक अर्थ और इन दोनों के लक्ष्यार्थ मूल्यों पर ध्यान देना ही पुनर्रचना या पुनर्गठन है। इस प्रक्रिया में लक्ष्य भाषा की भाषिक व्यवस्था और शैली संस्कार कथ्य को संप्रेसित करते हैं।

अनुवादक के गुण

अनुवादक की स्थिति बड़ी पेचीदा होती है। चूँकि हर घर भाषा की भावानुभूति पकड़ अलग-अलग होती है और उसमें अनुवादक को सतर्क रहना पड़ता है। वह न केवल

सेलनेट' के सहयोग से प्रारम्भ की गई इस प्रायोजक सेवा को अत्यन्त व्यापक बना दिया है। डेल्फी सेवा घरों और कार्यालयों में टेली कम्यूनिकेशन, टेलीविजन कार्यक्रम और फिल्मों के साथ-साथ मनपसंद सूचनाएं इलैक्ट्रॉनिक परदे पर उपलब्ध कराती है। अब धीरे-धीरे डिजिटल टैक्नालॉजी की सहायता से 'इलैक्ट्रॉनिक समाचार-पत्र' घर-घर पहुंचाने लगे हैं। इनमें सदैव नवीनतम सूचनाओं/ समाचारों का समावेश रहता है।

इन पंक्तियों के लेखक ने स्वयं अप्रैल 1996 में ट्रिनिडाड-टोबेगो (वेस्टइंडीज) की अपनी यात्रा में वहाँ की राजधानी पोर्ट आफ स्पेन के एक रेडियो स्टेशन पर इस तरह के 'इलैक्ट्रॉनिक समाचार-पत्र' को पढ़ा। अपने एक विदेशी मित्र के साथ लेखक ने भारत के समाचार जानने के लिए वहाँ की समाचार-प्रणाली को समझते हुए 'इंटरनेट' का व्यावहारिक प्रयोग देखा। बस कुछ बटन दबा कर कम्प्यूटर के परदे पर मनचाही खबरें उभरने लगी। जिन समाचारों को विस्तार के साथ देखना/पढ़ना था, उनके विस्तृत रूप भी एक अन्य बटन दबाकर सामने आने लगे। यानी, किसी भी देश के और अपनी रुचि के क्षेत्र में समाचारों को आप कहीं भी, कभी-भी नवीनतम रूप में देख/पढ़ सकते हैं। यहीं एक ही दिन पिछले कई-कई दिनों के राजनीतिक तथा खेल-समाचार लेखक ने एकसाथ 'पढ़े'।

'इंटरनेट' दुनिया भर में अलग-अलग जगहों पर लगे कम्प्यूटरों को जोड़ कर सूचना की आवाजाही के लिए बनाई गयी विशेष प्रणाली है। इसकी स्थापना अमेरिका में एक विशेष परियोजना के तहत हुई थी। इसका उद्देश्य था परमाणु हमले की स्थिति में संचार का एक नेटवर्क बनाये रखना। लेकिन जल्दी ही यह रक्षा शोध केन्द्रों से निकलकर व्यावसायिक क्षेत्रों में पहुँच गई। इंटरनेट पर कई सेवायें उपलब्ध हैं। जैसे—ई-मेल (इलैक्ट्रॉनिक मेल, जिसके माध्यम से कोई भी सूचना, संदेश, पत्र दुनिया के किसी कोने से तत्काल पहुँचाया जा सकता है), डब्ल्यू-डब्ल्यू-डब्ल्यू (वर्ल्ड वाइड वेब, इस डाटाबेस के द्वारा कोई भी उपभोक्ता इच्छित सूचना प्राप्त कर सकता है। शुरू-शुरू में डब्ल्यू-डब्ल्यू-डब्ल्यू में केवल लिखित सामग्री प्राप्त होती थी, लेकिन अब इसमें चित्र, ध्वनि, कार्टून आदि उपलब्ध हैं।) होम पेज (इसमें कोई भी व्यक्ति, कम्पनी या संस्था अपने बारे में विवरण देकर एक तरह से विज्ञापन कर सकता है। होम पेज से जानकारी लेने को 'हिट' कहा जाता है।), सूचना भण्डार (इंटरनेट से जुड़े कम्प्यूटरों में सूचनाओं का विशाल भण्डार उपलब्ध है। विश्वकोष, पुरानी नयी लोकप्रिय पुस्तकें, विशेष लेख, शोध-पत्र, अखबारों की कतरनें यहाँ तक कि पूरे अखबार एवं पत्रिकाएँ, कोर्ट के फैसले आदि के विशाल सूचना भण्डार में से कोई भी उपभोक्ता मनचाही सूचना ले सकता है।), खेल बुलेटिन, टेलनेट, एफ. टी.पी. (फाइल ट्रांसफर प्रोटोकॉल, जिसके जरिए हम दूर बैठे किसी व्यक्ति से जानकारी अपनी फाइल में ले सकते हैं और अपनी जानकारी उसे दे सकते हैं। यहाँ तक कि ऐतिहासिक महत्व के दस्तावेज, गीत कविताएँ, टी. वी. कार्यक्रमों के सार-संक्षेप आदि भी अपनी फाइल में लिये जा सकते हैं।) आर्ची और गोफर जैसे प्रोग्राम सूचनाओं के विशाल भण्डार में से अपनी आवश्यकता की सूचना ढूंढने में हमारी सहायता करते हैं। 'इंटरनेट' एक ऐसा विश्वव्यापी कम्प्यूटर नेटवर्क है जो दुनिया भर में फैला है, लेकिन उस पर न तो किसी का नियंत्रण है और न ही वह किसी कानूनी दायरे में आता है। इंटरनेट पर कोई भी व्यक्ति कोई भी जानकारी या तस्वीर डाल सकता है जो दुनिया भर में फैले लाखों उपभोक्ताओं तक पहुँच जायेगी। इंटरनेट का निजी इस्तेमाल करने वालों के नाम पते का कोई रिकार्ड नहीं रहता। अतः किसने क्या जानकारी इसमें डाली इसका पता लगाना मुश्किल है। यही कारण है कि इसके दुरुपयोग की भी घटनाएँ बढ़ती जा रही हैं।

दृश्य-श्रव्य माध्यम

(फिल्म, टेलीविजन एवं वीडियो)

प्रश्न 7. भारत में दूरदर्शन या वीडियो पत्रकारिता की समीक्षा कीजिए ?

उत्तर—भारत में प्रथम प्रायोगिक टी.वी. केन्द्र का उद्घाटन 15 सितम्बर, 1959 को देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के हाथों सम्पन्न हुआ। इसकी शुरूआत के मूल में यूनेस्को का एक सम्मेलन है। हुआ यों कि 1959 में नई दिल्ली में यूनेस्को का एक सम्मेलन आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन में यूनेस्को ने टेलीविजन कार्यक्रम शुरू करने के लिए भारत को 20,000 डॉलर का अनुदान स्वीकृत किया। उद्देश्य था एक जन माध्यम के रूप में टी.वी. के प्रयोग का अध्ययन करने हेतु एक पायलट परियोजना की स्थापना। इस नये संचार माध्यम को स्कूली बच्चों की औपचारिक शिक्षा में सहायता करने एवं आम आदमी को दिखाये जाने वाले

रूप से पत्रकारिता को भी नये आयाम मिल रहे हैं। ये आधुनिक जन-संचार-माध्यम मुख्यतः निम्नलिखित उद्देश्यों की संपूर्ति हेतु पत्रकारिता को समृद्ध कर रहे हैं—

(i) समाज में त्वरित और प्रभावशाली ढंग से सूचनाएँ एवं ज्ञान वितरित करने के लिए। (ii) विकसित तथा विकासशील समाज में विकास की गति को तीव्रता प्रदान करने के लिए। (iii) जन-चेतना एवं जन-जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका के निर्वाह के लिए। (iv) व्यावसायिक समाज में लाभ एवं प्रतिस्पर्धा की वृद्धि के लिए। (v) मनोरंजन के लिए। (vi) सुदूर देशों में फैले भिन्न भाषाओं, भिन्न जातियों, भिन्न वर्णों के मनुष्यों के बीच एक व्यापक विश्व बन्धुत्व की भावना के संचार के लिए। (vii) मानव मूल्यों के विकास के लिए। (viii) शांति-स्थापना के लिए। (ix) सब की खबर लेकर, सब को खबर देने और एक दूसरे के हर्ष-उल्लास, दुःख-अवसाद में सम्मिलित होने के लिए।

निस्संदेह पत्रकारिता को इन दिशाओं में समृद्ध करने में इन माध्यमों का योगदान है। किन्तु आज संचार के ऐसे असीमित संसाधन विकसित हो चुके हैं, जो हमें किसी एक केन्द्रीय सत्ता के हाथों में अनुपम शक्ति सौंपते दिखाई देते हैं। साथ ही एक मशीनी संस्कृति के निर्माण का खतरा बढ़ता दिखाई देने लगा है, जिसमें मानवीय संवेदनाओं के लिए स्थान नहीं है। विश्व के कई देशों में इलैक्ट्रॉनिक संचार माध्यमों के प्रहार से एकांतिकता बढ़ी है। मनुष्य अकेला और असुरक्षित अनुभव करने लगा है। उसकी वैयक्तिक गोपनीयता छिन गई है। हमें लगने लगा है कि हमारे ऊपर हर समय कोई नजर रखे हुए है। अपना निजी कुछ बचा ही नहीं है। ऐसा भी दिखाई देने लगा है कि कोई प्रभावशाली देश गरीब देशों को इन संचार माध्यमों के जरिए अपने विचारों का गुलाम बनाने में लगा है।

संचार के नये जन-माध्यमों का यदि हम सही ढंग से बुद्धिमत्तापूर्वक उपयोग करेंगे, तो ये माध्यम हमें अवश्य ही चमत्कारिक अवसर प्रदार करेंगे, अन्यथा इसके खतरे किसी भी पक्ष युद्ध से भी अधिक भयावह सिद्ध होंगे। हम पुनः ध्यान दें कि जनसंचार माध्यम एक व्यापक श्रोता समुदाय को निर्देशित करते हैं और जो हाथ इनका नियंत्रण करते हैं उनमें सीमित उत्तरदायित्व एवं शक्ति सौंपते हैं। बहुत बड़ी सीमा तक यह शक्ति राजनीतिक लाभों या अर्थ-प्राप्त के लिए कम पढ़े-लिखे अथवा कम चिन्तनशील मस्तिष्क वालों का शोषण करने के लिए प्रयुक्त होती है। यह शोषण कार्य अपने समर्थक पैदा करने, दर्शकों या श्रोताओं की आशाओं एवं भय के शोषण के लिए भयावह तथ्यों की प्रस्तुति के द्वारा किया जाता है। पत्रकारिता से जुड़े जन माध्यमों को इन दुष्प्रभावों से मुक्त रखने की अनिवार्य आवश्यकता है। खतरों के विरूद्ध हम अपने आपको सावधान रखें इसके आवश्यक है कि हम हर समय विचारों तथा अभिव्यक्ति की पारदर्शिता/स्पष्टता पर ध्यान दें कि हमें जो सूचनाएँ दी जा रही हैं उनके मूल में क्या है ? तथ्यों को किसलिए तोड़ा-मरोड़ा गया है? इन माध्यमों का नियंत्रण जिन हाथों में है, वे हाथ हमारे हत्यारे हैं या मानवीय करुणा के ताप से भरे हुए निष्पक्ष हाथ? आधुनिक इलैक्ट्रॉनिक जनसंचार माध्यमों से सबसे अधिक हमारी संस्कृति प्रभावित हो रही है। इस सांस्कृतिक संकट पर अनेक देशों ने चिन्ता प्रकट की है। यहाँ हमें महात्मा गाँधी के शब्द बार-बार याद आते हैं जो उन्होंने 1 जून, 1921 को कहे थे, कि, "मैं नहीं चाहता कि मेरे घर को कूड़ा-कर्कट भरते रहने के लिए मेरी खिड़कियों के समेत चारों ओर से दीवार खड़ी कर कर दिया जाय। मैं तो चाहता हूँ कि सभी देशों की संस्कृतियाँ मेरे घर के आसपास, जहाँ तक कि संभव हो सके मुक्त भाव से, विचरती रहें। किन्तु मैं ऐसा नहीं होने दूँगा कि कोई मुझे अपने प्रवाह में बहा ले जाए।"

आज हमारे देश के अनेक समाचार-पत्र एवं पत्रिकाएँ इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। सबसे पहले 'द हिन्दू' और 'इंडिया टुडे' इस सेवा से जुड़े थे। इसके बाद 'द टाइम्स आफ इंडिया', 'द इंडियन एक्सप्रेस', 'बिजनेस स्टैन्डर्ड', 'आउटलुक' तथा 'डेक्कन हेराल्ड' भी नेट पर गये। 'द हिन्दुस्तान टाइम्स' तथा हिन्दी का 'दैनिक जागरण' भी अब इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। दरअसल इंटरनेट पर स्थान पाने के लिए खर्च बहुत आता है। लगभग पचास हजार से दो लाख रुपये तक व्यय होता है। प्रतिमाह दस हजार से एक लाख रुपये तक फीस अलग से देनी होती है। यह खर्च चित्र, ग्राफिक्स आदि पर निर्भर है फिर भी अखबार और पत्रिकाएँ नेट पर अपनी सेवाएँ निःशुल्क उपलब्ध कराते हैं। उनका लक्ष्य मुख्य रूप से विदेशों में रहने वाले भारतीयों से संवाद स्थापित करना होता है और विज्ञापन।

बृजमोहन गुप्त ने 'इलैक्ट्रॉनिक अखबार' के विषय में अपने एक लेख में कहा है कि, "दरअसल इलैक्ट्रॉनिक समाचार-पत्र की कल्पना की नई नहीं है। टेलीटैक्स्ट सेवा की तरह से इलैक्ट्रॉनिक अखबार सूचनाएँ अद्यतन रूप में उपलब्ध होती रहती हैं। नेत्रहीनों के लिए निकलने वाला 'द गार्डियन' का संस्करण भी इलैक्ट्रॉनिक पद्धति से प्रसारित होता है और अपने पाठकों को कम्प्यूटर की आवाज में जोर-जोर से पढ़ कर सुनाया जाता है।"

मीडिया प्रयोगशाला के विशेषज्ञों का मानना है कि परम्परागत अखबार की तुलना में इलैक्ट्रॉनिक समाचार-पत्र काफी सस्ता होगा। रेडियो और टेलीविजन-कार्यक्रमों की तरह अखबार को प्रसारित करना भी आसान होगा।

इधर समाचार-पत्रों में कम्प्यूटर का प्रयोग बड़े पैमाने पर शुरू हो गया है। कई अखबारों ने अपने रिपोर्टर और संपादकों को कम्प्यूटर टर्मिनल उपलब्ध करा दिये हैं। रिपोर्टर अपने टर्मिनल पर समाचार टाइप करता है और परदे पर पढ़ने के बाद उसे केन्द्रीय कम्प्यूटर को भेज देता है। घुमक्कड़ संवाददाता अपने नन्हे कम्प्यूटर को टेलीफोन लाइन से जोड़ कर समाचार को केन्द्रीय टर्मिनल तक भेज सकता है।

इलैक्ट्रॉनिक स्रोतों से समाचार-संकलन की प्रवृत्ति निरन्तर बढ़ रही है। समाचार-पत्रों की मोटी-मोटी फाइलों, पत्रिकाओं, वार्षिक रिपोर्टों और किताबों की खाक छानने के स्थान पर अब कम्प्यूटर की सहायता से सूचनाएँ तुरन्त प्राप्त की जा सकती हैं।

सूचनाओं के इलैक्ट्रॉनिक भण्डारण की पद्धति 'इलैक्ट्रॉनिक डाटा बेस' के नाम से जानी जाती है। इलैक्ट्रॉनिक डाटा बेस में कई प्रणालियाँ शामिल की जा सकती हैं। वीडियो टैक्स्ट, आन लाइन डाटाबेसेज, इलैक्ट्रॉनिक बुलेटिन बोर्ड, टेलीटैक्स्ट, केवल टैक्स्ट और आडियो टैक्स्ट-जैसी प्रणालियाँ इलैक्ट्रॉनिक डाटाबेस का ही अंग हैं।

'वीडियो टैक्स्ट' प्रणाली वीडियो और टैक्स्ट (पाठ) से मिल कर बनी है। इसमें मुद्रित सूचना पाठ टेलीविजन के परदे (टर्मिनल) पर पढ़ा जा सकता है। इस प्रणाली में एक मेन फ्रेम कम्प्यूटर रहता है, जिसमें मनचाही सूचनाएँ एकत्र रहती हैं।

'वीडियो टैक्स्ट' प्रणाली में दुतरफा संवाद की सुविधा रहती है। इलैक्ट्रॉनिक संवाद-प्रेषण पद्धति से उपभोक्ता अपने संदेश को टाइप करके दूसरे उपभोक्ता तक आसानी से भेज सकता है। वीडियो टेक्स्ट सेवा चलाने वालों में 'कंपूसर्व इंफार्मेशन सर्विसेज' और 'विडिजी' अग्रणी हैं। इनके 6 लाख से अधिक उपभोक्ता हैं।

कई समाचार-पत्र 'आन लाइन डाटाबेस' प्रणाली का उपयोग कर रहे हैं। यह प्रणाली वीडियो टैक्स्ट प्रणाली की तरह की है, किन्तु इसमें दुतरफा संवाद की सुविधा नहीं है। आन

भारतीय पत्रकारों के प्रेरणास्रोत तथा पत्रकारिता के आदि शलाकापुरुष के रूप में राजाराम मोहन राय का योगदान अविस्मरणीय है। उनके मित्र ताराचन्द दत्त तथा भवानीचरण बनर्जी के संपादन में बंग्ला भाषा में सन् 1820 ई. में 'संवाद कामुदी' नाम से प्रकाशित हुआ। तब राजा राममोहन राय अंग्रेजी सरकार के मुखर विरोधी के रूप में नायकत्व प्राप्त कर चुके थे। उनका फारसी पत्र 'मीरात उल-अखबार' भी था, जिसे उन्होंने सरकार की दमनकारी नीति के कारण बाध्य होकर 4 अप्रैल, 1823 को बन्द कर देना पड़ा था। यानी वे, परिस्थितियाँ भारतीय प्रेस के नितान्त प्रतिकूल थीं। फिर भी सरकारी अंकुश से जूझते हुए और प्रतिपक्ष की भूमिका निर्भीकतापूर्वक निभाते हुए कठोर संघर्षों के बीच भारतीय प्रेस ने अपनी यात्रा जारी रखी। कुछ पत्र शुरू हुए, कुछ दिन चल कर बन्द हो गये। कलकत्ता के अलावा बम्बई, मद्रास तथा बनारस से भी कई पत्रों का प्रकाशन हुआ। 'मैड्रास कूरियर', 'मैड्रास गजेट', 'बाम्बे हेराल्ड', 'बाम्बे कूरियर' तथा 'बाम्बे गजट' उस समय के प्रमुख पत्र थे। उस समय 10 वर्षों में कलकत्ता, मद्रास तथा बम्बई से 15 पत्र निकले थे। इन सबके संपादक अंग्रेज थे और ये पत्र भी, जैसा कि नाम से स्पष्ट है, अंग्रेजी भाषा में निकले। देशी भाषा का पहला मासिक पत्र 'दिग्दर्शन' नाम से सन् 1818 में श्रीरामपुर बैपटिस्ट मिशन से प्रकाशित हुआ था। बंग्लाभाषा का यह मासिक पत्र ठीक चला। इसके आठ वर्ष बाद, 30 मई, 1826 को कलकत्ता से 'उदन्त मार्तण्ड' नामक हिन्दी का पहला पत्र निकला। इसके संपादक प्रकाशन कानपुरवासी पं. जुगल किशोर शुक्ल थे। अब तक की जानकारी के अनुसार 'उदन्त मार्तण्ड' ही हिन्दी का प्रथम पत्र है। लेकिन उस समय के अन्य पत्रों की भाँति ही 'उदन्त मार्तण्ड' अखबार भी 4 दिसम्बर, 1828 को बन्द कर देना पड़ा। बाद में 1850 में शुक्ल जी ने ही 'सामदण्ड मार्तण्ड' नामक नया पत्र निकाला।

भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम में प्रेस ने बहुत बड़ी भूमिका का निर्वाह किया। उस काल खण्ड में बहुत से पत्र निकले। सभी का स्वर देशभक्ति के परिपूर्ण था और सब में समाज-सुधार का आह्वान भी था।

सन् 1845 में हिन्दी भाषी क्षेत्र से पहला हिन्दी पत्र "बनारस अखबार" निकला। बनारस से निकलने वाले इस पत्र के संपादक मराठी भाषी गोविन्द रघुनाथ थत्ते थे, किन्तु पत्र के कर्ताधर्ता शिवप्रसाद सितारेहिन्द का ही वर्चस्व था। हिन्दी का पत्र होते हुए भी, इस पर उर्दू का गहरा रंग था, क्योंकि सितारेहिन्द उर्दू प्रधान 'हिन्दुस्तानी' के आग्रही थे। इसी क्रम में इन्दौर से 1848 में प्रकाशित होने वाले द्विभाषी (हिन्दी-उर्दू) "मालवा अखबार" का उल्लेख किया जा सकता है। इसमें उर्दू की प्रधानता थी। सन् 1857 तक कई अखबार निकले, जिनमें हिन्दी के अलावा दूसरी भारतीय भाषा को भी अपनाया गया था। इसमें से कुछ उल्लेखनीय पत्र हैं—11 जून, 1846 को पाँच भाषाओं में प्रकाशित "मार्तण्ड" (कलकत्ता), 1847 में आगरा से प्रकाशित "बुद्धिप्रकाश" (संपादक मुंशी सदासुख लाल), 1850 में बनारस से प्रकाशित "सुधाकर" (बंग्ला और हिन्दी में, सं. तारामोहन मैत्र), और 1853 में प्रकाशित "आगरा गजेट" (उर्दू-हिन्दी में, सं. मुंशी लछमनदास), और 1855 में प्रकाशित "प्रजा हितैषी" (सं. लक्ष्मणसिंह) तथा 1854 में प्रकाशित दैनिक "समाचार सुधावर्षण" (द्विभाषी, कलकत्ता) में से प्रायः सभी अखबारों का स्वर सरकार विरोधी था। अपनी साधनहीनता के चलते सरकार के दमनकारी हथकंडों के बावजूद इन आरम्भिक पत्रों ने जन-जागरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। इन पत्रों के संपादक ही प्रायः प्रकाशक भी थे। ऐसे में उनका दायित्व दुगुना था। हिन्दी में अभी समाचार-पत्रों की लोकप्रियता नहीं हुई थी,

यहै असीस दूत तुमको मिलि हम सब कारे-
सफल होहिं मन के सब ही संकल्प तुम्हारे।'

(ग) प्रताप नारायण मिश्र- 'ब्राह्मण' के संपादक प्रतापनारायण मिश्र (1856-1894) का जन्म बैजेगाँव, उन्नाव में हुआ था। पिता के कानपुर चले जाने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा वहीं हुई। ज्योतिष का पैतृक व्यवसाय न अपना कर वे साहित्य-रचना की ओर प्रवृत्त हुए। कविता, निबंध और नाटक उनके मुख्य रचना क्षेत्र हैं। कानपुर रंगमंच और वहाँ की साहित्यिक संस्था 'रसिक-समाज' से उनका निकट का सम्बन्ध था। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- प्रेमपुष्पावली, मनकी लहर, लोकोक्ति शतक, पृथ्यन्ताम् और श्रृंगार-विलास। प्रताप-लहरी उनकी प्रतिनिधि कविताओं का संकलन है। उनकी रचनाओं का विषय भक्ति और प्रेम की तुलना में समसामयिक देश-दशा और राजनीतिक चेतना का वर्णन करना अधिक था। यथा-

''पढ़ि कमाय कीन्हों कहा, हरे न देश कलेस।
जैसे कन्ता घर रहे, तैसे रहे विदेश।।'

उनकी भाषा खड़ीबोली और ब्रज भाषा दोनों थी। हास्य-व्यंग्य उनके काव्य के पसंद के विषय रहे हैं।

(घ) जगनमोहन सिंह- ठाकुर जगनमोहन सिंह (1857-1899) म.प्र. की विजय राघवगढ़ रियासत के राजकुमार थे। उन्होंने काशी में संस्कृत और अंग्रेजी की शिक्षा प्राप्त की। वहाँ रहते हुए उनका भारतेंदु हरिश्चंद्र से सम्पर्क हुआ, किन्तु भारतेंदु की रचना शैली की उन पर वैसी छाप नहीं मिलती, जैसी प्रेमघन एवं प्रतापनारायण मिश्र में। श्रृंगार-वर्णन और प्रकृति -सौन्दर्य की अवतारणा उनकी प्रमुख काव्य-प्रवृत्तियाँ हैं। उनकी काव्य-कृतियों 'प्रेमसंपत्तिलता' (1885), श्यामलता (1886), श्याम-सरोजिनी (1885) और देवयानी (1886) में श्रृंगार -वर्णन और प्रकृति-सौंदर्य सर्वत्र पाया जाता है। 'श्यामास्वप्न' उपन्यास में भी कुछ कविताओं को देखा जा सकता है। उनकी अनूदित 'ऋतुसंहार' और 'मेघदूत' ब्रजभाषा की सरस कृतियाँ हैं।

उनकी कविता का एक उदाहरण -

'कुलकानि तजी गुरु लोगन में बसिकै सब बैन-कुबैन सहा।
परलोक नसाय सबै बिधि सों उनमत्त को मारग जान गहा।।
'जगमोहन' धोय हया निज हाथन या तन पाल्यौ है प्रेम महा।
सब छोड़ि तुम्हें हम पायो अहो तुम छोड़ि हमें कहो पायो कहा।।'

उक्त कवियों के अतिरिक्त भारतेंदु काल के कवि थे- अंबिका दत्त व्यास (1858-1900), राधाकृष्ण दास (1865-1907), नवनीत चतुर्वेदी (1868-1919), दिवाकर भट्ट, राजेश्वरी प्रसाद सिंह प्यारे, गुलाब सिंह आदि। वस्तुतः भारतेंदु युग पुरातन और नवीन के सन्धि स्थल पर स्थित है।

प्रेमघन ने भी कुछ इसी प्रकार अपनी कविता में कहा है ''कि सनाथ भोली भारत की प्रजा अनाथन।' भारतेन्दु युग की राष्ट्रीय धारा के दो पक्ष हमारे सामने आते हैं। एक है देशभक्ति का और दूसरा राजभक्ति का। देशभक्ति में अंग्रेजी शासन के खिलाफ बोलते हैं तो राजभक्ति की कविताओं में जजिया कर जैसे बन्धनों से मुक्ति की प्रशंसा भी करते हैं, जिसमें हमें 'जयति राजराजेश्वरी जय जय परमेश' जैसी पंक्तियाँ भी मिलती हैं।

इस युग के कवियों ने सामाजिक जीवन की उपेक्षा नहीं की। इसीलिए भारतेंदु युग में नारी शिक्षा, विधवाओं की दुर्दशा, अस्पृश्यता आदि को लेकर जो सहानुभूतिपूर्ण कविताएँ लिखी गईं उनके प्रतिपाद्य की नवीनता ने सहृदय-समुदाय को विशेष रूप से आकृष्ट किया। इन समस्याओं को रूपायित करने को समाज के मध्यमवर्गीय लोगों को पात्र बनाया। आर्यसमाज और ब्रह्मसमाज के कार्यों को आधार बनाकर भारतेंदु और प्रतापनारायण आदि ने जो साहित्य तैयार किया उसकी कहीं-कहीं भर्त्सना भी हुई। राधाचरण गोस्वामी इनमें प्रमुख थे जिन्होंने इसे भारतीय संस्कृति के अनुरूप नहीं माना। राष्ट्रीय भावना में स्वदेशी का भी इन्होंने पहला महत्व बताया। जिसके अन्तर्गत इन सभी लेखकों ने स्वदेशी उद्योग को प्रोत्सहित किया। यथा- 'जीवन विदेश की वस्तु लै तो बिन कछु नहिं करि सकता'। भारतेंदु और प्रतापनारायण ने समाज की पीड़ा कुछ इस प्रकार व्यक्त की -

रोवहु सब मिलि, आवहु भारत भाई।
हा !हा !भारत-दुर्दशा न देखी जाई।।'-भारतेंदु

इसी तरह प्रतापनारायण मिश्र की कविता देखें-

'तबहि लख्यों जहं रह्यो एक दिन कंचन बरसत।
तहं चोथाई जन रूखी रोटिहुं को तरसत।।
जहं आमन की गुठली अरु बिरछन की छालैं।
ज्वान चून महं मेलि लोग परिवारहिं पालै।।
नेन तेल लकरी घासहु पर टिकस लगै जहं।
चना चिरौंजी मोल मिलैं जहं दीन प्रजा कहं।।'

(ग) भक्ति भावना- भारतेंदु युग में परम्परागत धार्मिकता को तीन वर्गों में रखा जा सकता है। इसमें निर्गुण, वैष्णव भक्ति सामान्यत: अपने पूर्वपरम्परा के अनुसार चल रही थी। इस युग की प्राथमिकता नहीं थीं। स्वदेशानुरा-समन्वित भक्ति ही इस युग का प्रधान विषय था।

(घ) श्रृंगारिकता- भारतेंदु युगीन कवियों ने श्रृंगार रस को प्रधानता दी। यह ठीक है कि उनका श्रृंगार मर्यादित रहा चाहे वह राधाकृष्ण दास का 'राम-जनकी' कविता हो या भारतेंदु के प्रेम-माधुरी, प्रेम तरंग अथवा प्रेम-फुलवारी। भारतेंदु में घनानंद की सरसता मिलती है-

भारतेंदु युग के सर्वश्रेष्ठ रचनाकार भारतेंदु के अतिरिक्त निम्न रचनाकार हैं जिनकी रचनाओं को तीन भागों में बाँटकर यहाँ देखा जा सकता है-(1) (अ) कृष्ण चरित्र सम्बन्धी नाटक एवं नाटककार- भारतेंदु-कृत 'चंद्रावली', अंबिकादत्त व्यास-कृत 'ललिता' (1884), हरिहरदत्त दुबे-महारास (1884), खड्ग बहादुर मग का महारास (1885) और कल्पवृक्ष (1886), सूर्यनारायण सिंह-कृत 'श्यामानुराग नाटिका' (1899)आदि उल्लेखनीय हैं।

(ब) कृष्ण-परिवार के व्यक्तियों के चरित्र से सम्बन्धित-चंद्र शर्मा-कृत 'उषाहरण', अयोध्या सिंह 'उपाध्याय'-कृत 'प्रद्युम्न-विजय'(1893)तथा रुक्मणी -परिणय' (1894), आदि।

(2) रामचरित सम्बन्धी नाटक-देवकी नंदन खत्री-कृत 'सीताहरण' (1876)और रामलीला (1879), शीतला प्रसाद त्रिपाठी-कृत 'रामचरितावली' (1887), ज्वाला प्रसाद मिश्र- कृत 'सीता-वनवास' (1895) और द्विजदास -कृत 'रामचरित्र नाटक' (1891), उल्लेखनीय हैं।

(3) अन्य पौराणिक आख्यानों पर आधारित नाटक- भारतेंदु -कृत 'सत्य हरिश्चंद्र' और 'सती-प्रताप', गजराज सिंह कृत- 'द्रोपदी-हरण' (1885), श्रीनिवासदास कृत- 'प्रहलाद चरित्र' (1888), बालकृष्ण भट्ट कृत- 'नल-दमयंती-स्वयंवर' (1895), शालिग्राम कृत-'अभिमन्यु' (1896) उल्लेखनीय हैं। भारतेंदु युग के नाटकों का मूल उद्देश्य मनोरंजन के साथ ही जनमानस को जाग्रत करना और उसमें आत्मविश्वास पैदा करना था।

(ख) उपन्यासकार और रचनाएँ-भारतेंदु काल में सामाजिक, ऐतिहासिक, तिलस्मी-ऐयारी, जासूसी तथा रोमानी उपन्यासों की रचना-परम्परा का सूत्रपात हुआ। सामाजिक उपन्यासों में 'भाग्यवती' और 'परीक्षागुरु' के अतिरिक्त बालकृष्ण भट्ट -कृत 'रहस्य कथा' (1879), 'नूतन ब्रह्मचारी' (1886) और 'सौ अजान एक सुजान' (1892), राधाकृष्ण दास-कृत 'निस्सहाय हिंदू' (1890), लज्जाराम शर्मा -कृत 'धूर्त रसिकलाल' (1890) और 'स्वतंत्र रमा और परतंत्र लक्ष्मी' (1899), किशोरी लाल गोस्वामी-कृत 'त्रिवेणी व सौभाग्यश्री' (1890) आदि उल्लेखनीय हैं। तिलिस्मी-ऐयारी उपन्यासों में देवकी नंदन-कृत 'चंद्रकांता' (1882), 'चंद्रकांता-संतति (चौबीस भाग, 1886)। संक्षेप में कह सकते हैं कि हिन्दी के भारतेंदु युगीन मौलिक उपन्यासों पर संस्कृत के कथा-साहित्य एवं परवर्ती नाटक-साहित्य के प्रभाव के साथ ही बंगला - उपन्यासों की छाप भी लक्षित की जा सकती है।

(ग) कहानी - भारतेंदु युग में आधुनिक कलात्मक कहानी का आरम्भ नहीं हुआ। कहानियों के नाम पर जो प्रकाशित संग्रह प्राप्त हुए हैं, जैसे मुंशी नवल किशोर द्वारा संपादित 'मनोहर कहानी (1880) में संकलित एक सौ कहानियाँ, अंबिकादत्त व्यास-कृत 'कथा-कुसुम-कलिका' (1888), शिव प्रसाद सितारे हिंद-कृत 'वामा-मनोरंजन'

मंजरी, मुद्राराक्षस, सत्य हरिश्चंद्र, भारत जननी। कुल मिलाकर भारतेंदु की रचनाओं की संख्या सत्तर है। 'भारतेंदु -ग्रंथावली ' के प्रथम भाग में उनकी सभी छोटी-बड़ी रचनाएँ एक जिल्द में उपलब्ध हैं।

अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभा के बल से एक ओर तो वे पद्माकर, द्विजदेव की परम्परा में दिखाई पड़ते थे, दूसरी ओर बंगदेश के माइकेल और हेमचंद्र की श्रेणी में। एक ओर तो राधाकृष्ण की भक्ति में झूमते हुए भक्तमाल गूँथते दिखाई देते थे दूसरी ओर मन्दिरों के अधिकारियों और टीकाधारी भक्तों के चरित्र की हँसी उड़ाते और स्त्री शिक्षा समाज सुधार आदि पर व्याख्यान देते थे। हरिश्चंद्र के जीवनकाल में ही लेखकों और कवियों का एक खासा मण्डल तैयार हो गया था। आचार्य रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं कि यह याद रखना चाहिये कि अपने समय के सब लेखकों में भारतेंदु की भाषा साफ-सुथरी और व्यवस्थित होती थी। 'कविवचन सुधा' और 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' उनके सम्पादन में प्रकाशित होने वाली प्रसिद्ध पत्रिकाएँ थीं। नाटक, निबन्ध आदि की रचना द्वारा उन्होंने खड़ीबोली की गद्य-शैली के निर्धारण में भी महत्वपूर्ण योग दिया था। आचार्य शुक्ल ही लिखते हैं-''नीलदेवी और भारत दुर्दशा आदि नाटकों के भीतर आई हुई कविताओं में देश-दशा की जो मार्मिक व्यंजना हुई है वह स्तुत्य है। '' काव्य शैली पर एक छंद-

'रहैं क्यों एक म्यान असि दोय।
जिन नैनन में हिर-रस छायो तेहि क्यों भावै कोय।
जा तन-मन में रमि रहे मोहन तहां ग्यान क्यौं आवै।
चाहे जितनी बात प्रबोधे ह्यां को जो पतिआवै।
अमृत खाई अब देखि इनारुन को मूरख जो भूलै।
हरीचन्द' ब्रज तो कदली-बन काटौ तो फिकि फूलै।'

(ख) बद्रीनाथ नारायण चौधरी 'प्रेमघन'- भारतेंदु-मंडल के कवियों में प्रेमघन (1855-1923) का प्रमुख स्थान है। मिर्जापुर के एक ब्राह्मण परिवार में उनका जन्म हुआ। भारतेंदु की भाँति पद्य एवं गद्य दोनों में विपुल साहित्य-रचना की। 'नगरी-नीरद' 'आनन्द काम्बिनी' को संपादित किया। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं-जीर्ण-जनपद, आनंद अरुणोदय, हार्दिक हर्षादर्ष, मयंक महिमा, अलौकिक लीला, वर्षा-बिंदु आदि। भारतेंदु युग की सभी प्रवृत्तियाँ उनके काव्य में पायी जाती हैं। उनका मुख्य क्षेत्र जातीयता, समाजदशा देशप्रेम था। उनकी भाषा ब्रज थी।

'अचरज होत तुमहुं सम गोरे बाजम कारे,
तसों कारे 'कारे' शब्दहु पर हैं वारे ।
कारे कृष्ण, राम, जलधर जल-बरसनवारे,
कारे लागत ताहीं सों कारन कौं प्यारे।
यातें नीको है तुम 'कारे' जाहु पुकारे,

13. किस आलोचक ने निबंधकार प्रताप नारायण मिश्र और बालकृष्ण भट्ट को हिन्दी का 'स्टील' और 'एडीसन' कहा ? – रामचंद्र शुक्ल

14. भारतेंदु हरिश्चंद्र का पहला मौलिक नाटक कौन-सा है ? – वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति

15. भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म किस वर्ष हुआ ? –1850 ई.

16. आधुनिक हिन्दी साहित्य का आरम्भ कौन-सा माना जाता है ?–1850 ई.

17. भारतेंदु युग को पुनर्जागरण काल किसने कहा ? –डॉ. नगेन्द्र

18. आधुनिक काल को गद्यकाल किसने कहा ? – रामचंद्र शुक्ल

19. हिन्दी का प्रथम नाटक कौन-सा है ? – आनंद रघुनंदन

20. गोपाल गहमरी ने किस प्रकार के उपन्यास लिखे ? – जासूसी

21. 'रानी केतकी कहानी' के रचनाकार कौन हैं ? – इंशा अल्लाह खां

22. 'समझदार की मौत' व्यंग्यात्मक निबन्ध किसका है ? – प्रतापनारायण मिश्र

23. 'अमर सिंह राठौर' किसका ऐतिहासिक नाटक है ? – राधाचरण गोस्वामी

24. मिश्र बंधु विनोद कितने भागों में है ? – चार

25. 'निस्सहाय हिन्दू' किस प्रकार का उपन्यास है ? – सामाजिक

26. 'आलोचना' का प्रारम्भ किस कवि द्वारा माना जाता है? – भारतेंदु

27. 'गंगा लहरी ' के रचनाकार हैं ? – पद्माकर

28. 'बिहारी-बिहार' के रचनाकार हैं ? – अंबिकादत्त व्यास

29. 'हिन्दी नवरत्न' किसकी पुस्तक है ? – रामचंद्र शुक्ल

30. ''निजभाषा उन्नति अहै,सब उन्नति को मूल। ''- किसकी पंक्तियाँ हैं – भारतेंदु

31. ''आठ मास बीते जजमान,अब तो करौ दक्षिणा दान''-किसकी पंक्तियाँ हैं ? – प्रतापनारायण मिश्र

32. ''भीतर भीतर सब रस चूसै, हंसि हंसि के तन-मन-धन मूसै।
जहिर बातन में अति तेज, क्यों सखि सज्जन! नहिं अंगरेज।।''
-किसकी पंक्तियाँ हैं? – भारतेंदु

33. 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' नाटक का कौन-सा रूप है? – प्रहसन

34. 'भारतेंदु पत्रिका' के संपादक कौन थे ? – राधाचरण गोस्वामी

35. तिलिस्मी-ऐयारी उपन्यास लिखने में सिद्ध हस्त थे ? – देवकीनंदन खत्री

36. 'पावस पचासा' किसकी रचना है? – अंबिकादत्त व्यास

●●

2. भारतेंदु युग की चेतना पुनर्जागरण की थी। अतः उस युग के कवियों पर इसका प्रभाव स्वभाविक था। शृंगारिक रसिकता, अलंकरण मोह, रीति-निरूपण, प्रकृति का उद्दीपनात्मक चित्रण, प्रभृति रीतिकालीन प्रवृत्तियों का महत्व कम हो रहा था।

3. भारतेंदु-युग अथवा पुनर्जागरण-काल का उदय हिन्दी-कविता के लिए नवीन जागरण के संदेश वाहक युग के रूप में हुआ था, किन्तु इसके सीमांकन के सम्बन्ध में मतभेद हैं।

4. काव्यधारा- भारतेंदु युगीन काव्यधारा को दो भागों में रखा जा सकता है।

5. भारतेंदु युग में यों तो शताधिक कवियों ने विविध प्रवृत्तियों के अंतर्गत रचनाएँ की हैं किन्तु उनमें राजा लक्ष्मण सिंह, भारतेंदु हरिश्चंद्र, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', प्रतापनारायण मिश्र, कार्तिक प्रसाद खत्री, जगनमोहन सिंह, अंबिकादत्त व्यास और राधाकृष्णदास ही प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं।

6. उपन्यास: भारतेंदु-काल में सामाजिक, ऐतिहासिक, तिलस्मी-ऐयारी, जासूसी तथा रोमानी उपन्यासों की रचना-परंपरा का सूत्रपात हुआ।

7. कहानी- भारतेंदु युग में आधुनिक कलात्मक कहानी का आरंभ नहीं हुआ।

8. निबंध - भारतेंदु युग में सबसे अधिक सफलता निबंध-लेखन में प्राप्त हुई। राजनीति, समाज सुधार, धर्म, अध्यात्म, आर्थिक दुर्दशा, अतीत का गौरव, महापुरुषों की जीवनियाँ आदि विषयों पर विचार प्रकट करते हुए भारतेंदु-युग के लेखकों ने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से निबंध -साहित्य को खूब समृद्ध किया।

9. भारतेंदु युग में आलोचना का उत्कृष्ट उदाहरण नहीं मिलता। इस युग में पत्र-पत्रिकाओं में राष्ट्रीय हित और समाज कल्याण को दृष्टि में रखकर पुस्तकों की समीक्षा की जा रही थी।

10. इस काल में जीवनी-साहित्य लिखने की परम्परा मिलती है, किन्तु वह राजा-रानियों, तत्कालीन शासकों की जीवनी लिखने की अधिक दिखती है।

11. भारतेंदु युग साहित्य के उत्थान का युग था। इस युग के साहित्यकारों का अदम्य साहस ही युग का मूल्यवान तत्व था।

12. हिन्दी गद्य-साहित्य के विकास में भारतेंदु-युग का महत्व और मूल्य असाधारण है। इस युग में हिन्दी प्रदेश में आधुनिक जीवन चेतना का उन्मेष हुआ।

13. आधुनिक गद्य-साहित्य का यह प्रथम उत्थान था और इसमें सबसे मूल्यवान तत्व था-साहित्यकारों का अदम्य उत्साह।

14. इस युग में न केवल हिन्दी-गद्य का स्वरूप स्थिर हुआ, वरन् उसके शुद्ध साहित्योपयोगी और व्यवहारोपयोगी रूपों की पूर्ण प्रतिष्ठा हुई।

(1886), आदि वे लोक प्रचलित तथा इतिहास-पुराण-कथित शिक्षा, नीति या हास्य प्रधान कथाएँ हैं, जिन्हें तत्कालीन लेखकों ने स्वयं लिखकर या लिखवा कर संपादन करके प्रकाशित करा दिया।

(घ) निबंध -भारतेंदु युग में सबसे अधिक सफलता निबन्ध-लेखन में प्राप्त हुई। राजनीति, समाज सुधार, धर्म, अध्यात्म, आर्थिक दुर्दशा, अतीत का गौरव, महापुरुषों की जीवनियाँ आदि विषयों पर विचार प्रकट करते हुए भारतेंदु-युग के लेखकों ने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से निबंध-साहित्य को खूब समृद्ध किया। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने तो बालकृष्ण भट्ट और प्रताप नारायण को 'स्टील' और 'एडीसन' कहा। भारतेंदु युग के प्रमुख निबंधकारों का सम्बन्ध उस समय की किसी न किसी पत्र-पत्रिकाओं सर्मा था जिसमें भारतेंदु हरिश्चंद्र का हरिश्चंद्र मैगजीन, प्रतापनारायण मिश्र का ब्राह्मण, बालकृष्ण भट्ट का हिन्दी-प्रदीप, बदरीनारायण चौधरी का आनंद कादंबिनी, श्रीनिवास दास का सदादर्श और राधाचरण गोस्वामी का भारतेंदु। प्रतापनारायण मिश्र के कुछ निबंध- धोखा, खुशामद, आप बात, दाँत, भौं, नारी, मुच्छ, परीक्षा, ह, द, समझदार की मौत आदि। बालकृष्ण भट्ट के निबंध-बाल-विवाह, स्त्रियाँ और उनकी शिक्षा, राजा और प्रजा, अंग्रेजी शिक्षा और प्रकाश आदि ।

(च) आलोचना तथा गद्य साहित्य की अन्य विधाएँ- भारतेंदु युग में आलोचना का उत्कृष्ट उदाहरण नहीं मिलता। इस युग में पत्र-पत्रिकाओं में राष्ट्रीय हित और समाज कल्याण को दृष्टि में रखकर पुस्तकों की समीक्षा की जा रही थी। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भारतेंदु-युग में आधुनिक हिन्दी आलोचना का सूत्रपात तो हो गया था किन्तु तत्कालीन समीक्षकों में न तो सूक्ष्म काव्य सौन्दर्य-विधायक तत्वों को पहचानने की क्षमता थी और न ही रचना में निहित जीवन मूल्यों को सौंदर्य-तत्वों से जोड़कर व्याख्यायित करने की शक्ति।

इस काल में जीवनी-साहित्य लिखने की परंपरा मिलती है, किन्तु वह राजा-रानियों, तत्कालीन शासकों की जीवनी लिखने की अधिक दिखती है जैसे कार्तिक प्रसाद खत्री की अहिल्या बाई का जीवन चरित्र, छत्रपति शिवाजी का जीवन चरित्र (1890) या काशीनाथ खत्री के 'हिन्दुस्तान की अनेक रानियों का जीवन चरित्र' (1883) आदि। यात्रावृत का यह प्रारम्भ काल था। भारतेंदु के 'कविवचनसुधा' के अंकों में 1871 से 1879 तक प्रकाशित मिलते हैं। जैसे सरयू-पार की यात्रा, लखनऊ की यात्रा आदि। बालकृष्ण भट्ट और प्रतापनारायण के क्रमशः गया-यात्रा और विलायत यात्रा आदि।

भारतेंदु युग साहित्य के उत्थान का युग था। इस युग के साहित्यकारों का अदम्य साहस ही युग का मूल्यवान तत्व था।

इकाई सारांश/याद रखने की बातें-

1. भारतेंदु जी ने जिस प्रकार हिन्दी गद्य की भाषा का परिष्कार किया, उसी प्रकार काव्य की ब्रज भाषा का भी।

प्रश्नावली

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. भारतेंदु युग की विशेषताएँ बतलाइये।
2. भारतेंदु युग के रचनाकारों की प्रवृत्ति स्पष्ट कीजिए।
3. क्या राष्ट्रीयता का स्वर इस युग की विशेषता मानी जा सकती है।
4. भारतेंदु युग की साहित्यिक, सामाजिक,धार्मिक प्रवृत्तियाँ बताइये।
5. भारतेंदु युग के प्रमुख रचनाकारों की कृतियों की विशेषताएँ बताइये।
6. भारतेंदु युग की मौलिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
7. भारतेंदुयुगीन काव्यधारा पर प्रकाश डालिये।
8. भारतेंदु के नाटकों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
9. भारतेंदु युग के सामाजिक नाटकों का परिचय दीजिए।

(ख) वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर -

1. आधुनिक काल की समय-सीमा मानी गई है? - 1850 से आज तक
2. 'सत्यार्थ प्रकाश' किस भाषा में दयानंद सरस्वती ने लिखा था ? -हिन्दी
3. हिन्दी का प्रथम उपन्यास कौन-सा माना जाता है ? -परीक्षा-गुरु
4. 'सितारे हिंद' किस लेखक का उपन्यास है ? -राजा शिवप्रसाद
5. 'नासिकेतोपख्यान' किसकी रचना है ? - सदल मिश्र
6. ''भारतेंदु ने हिन्दी साहित्य को एक नये मार्ग पर खड़ा किया। वे साहित्य के नए युग के प्रवर्तक थे'' -कथन किसका है ? - रामचंद्र शुक्ल
7. ''भारतेंदु का पूर्ववर्ती काव्य संतों की कुटिया से निकलकर राजाओं और रईसों के दरबार में पहुँच गया था। उन्होंने एक तरफ तो काव्य को फिर से भक्ति की पवित्र मंदाकिनी में स्नान कराया और दूसरी तरफ उस दरबारीपन से निकालकर लोक-जीवन के आमने-सामने खड़ा कर दिया।''-कथन किसका है ? - हजारी प्रसाद
8. भारतेंदु युग की समय-सीमा कहाँ तक जाती है? -1850 से 1900
9. हिन्दी का पहला समाचार-पत्र कौन-सा है ? - उदंत मार्तण्ड
10. हिन्दी का पहला समाचार-पत्र कहाँ से निकला है ? - कलकत्ता
11. हिन्दी का पहला समाचार-पत्र कब निकला है ? -1826
12. 'स्वर्ग की विचार सभा' निबंध किसका है ? - हरिश्चंद्र

आजु लों न मिले तो कहा हम तो तुमरे सब भाँति कहावैं।
मेरौ उराहनौ है कछु नाहिं सबै फल आपुने भाग को पावैं।
जो हरिचंद भई सो भई अब प्रान चले चहं तासों सुनावैं।
प्यारे जू है जग की यह रीति बिदा की समैं सब कंठ लगावैं।'

(ङ) प्रकृति चित्रण एवं हास्य व्यंग्य- प्रकृति चित्रण इस युग की अंगभूत विशेषता थी, किन्तु अधिकतर कवियों ने परम्परा निर्वाह ही किया। भारतेंदु ने 'हरिश्चंद' नाटक में गंगा का तो चंद्रावली में यमुना का वर्णन किया। इस काल की विशेषता यह रही कि इन्होंने रीतिकाल के उद्दीपन को आदर्श न मानकर संस्कृत साहित्य से अपना आधार ग्रहण किया। पर्वत शृंखला की शोभा का उदाहरण-

'पहार अपार कैलास से कोटिन ऊँची शिखालगि अम्बर चूम।
निहारत दीठि भ्रमैं पगिया गिरि जात उतंगता ऊपर झूम।
प्रकाश पतंग सों चोटिन के बिकसै अरविंद मलिन्द सुझूम।
लसै कटि मेखला के जगमोहन कारी घटा घोरत धूम।'

और अयोध्या सिंह 'हरिऔध' (1865-1945) की कविताओं का प्रकाशन भी इस युग में आरम्भ हो गया था किन्तु इनके प्रमुख साहित्यकारों की रचनाएँ एवं उनकी विशेषताएँ-

भारतेंदु युग में यूँ तो शताधिक कवियों ने विविध प्रवृत्तियों के अन्तर्गत रचनाएँ की हैं किन्तु उनमें राजा लक्ष्मण सिंह, भारतेंदु हरिश्चंद्र, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', प्रतापनारायण मिश्र, कार्तिक प्रसाद खत्री, जगनमोहन सिंह, अम्बिकादत्त व्यास और राधाकृष्णदास ही प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त श्रीधर पाठक (1859-1928), बालमुकुंद गुप्त (1865-1907), कृतित्व का बहुल अंश मूल्यांकन द्विवेदी युग में ही सामने आया।

(क) भारतेंदु हरिश्चंद्र (1850-1885 ई.)- अपने समय के इतिहास प्रसिद्ध सेठ अमीचंद के वंश-परम्परा में बाबू गोपालचंद्र 'गिरधरदास' के पुत्ररूप में भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म काशी में भाद्र शुक्ल 5 संवत् 1907 को और मृत्यु 35 वर्ष की अवस्था में माघ कृष्ण 6 संवत् 1941 को हुआ। संवत् 1925 में उन्होंने 'विद्यासुंदर नाटक' बंगला से अनुवाद करके प्रकाशित किया। सं.1930 में 'हरिश्चंद्र मैगजीन' नाम की एक मासिक पत्रिका निकाली। गद्य रचना के अन्तर्गत भारतेंदु का ध्यान नाटकों की ओर गया।

भारतेंदु की प्रमुख रचनाएँ- नाटक (मौलिक) 'वैदिकी हिंसा-हिंसा न भवति', 'सत्य हरिश्चंद्र', 'विषस्य विषमौषधम', 'भारत-दुर्दशा', 'नीलदेवी', 'अंधेरनगरी', 'प्रेमयोगिनी', 'सतीप्रताप' (अधूरा)। अनुवाद- विद्यासुंदर, पाखण्ड विखण्डवन, धनंजय विजय, कर्पूर

गद्य साहित्यकार -इस काल में गद्य साहित्यकार लक्ष्मण सिंह (1826-1896), राजा शिवप्रसाद सिंह 'सितारेहिंद' (1823-1895), नवीनचंद्र राय (1837-1890) आदि हैं। भारतेंदु कालीन साहित्य सांस्कृतिक जागरण का साहित्य है। इस युग में गद्य साहित्य की प्रत्येक विधा पर कुछ न कुछ कार्य हुआ है। राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिंद' ने छात्रों के लिए पाठ्य पुस्तकें तैयार कीं, नवीनचंद्र राय के साहित्य की मूल प्रेरणा धार्मिक है और श्रद्धाराम फुगौरी भी धार्मिक व्यक्ति थे। इस युग में मुख्य संघर्ष हिन्दी की स्वीकृति और स्थापित होने की है। फारसी राजकाज की भाषा है उसके स्थान पर हिन्दी प्रतिष्ठित हो इस युग के लेखकों का लक्ष्य था। राजा शिवप्रसाद सिंह और राजा लक्ष्मण सिंह ने हिन्दी के स्वरूप पर दो प्रकार से कार्य किया। लक्ष्मण सिंह ने विशुद्ध संस्कृत निष्ठ हिन्दी का समर्थन किया और राजा शिवप्रसाद ने हिन्दी का गँवारूपन दूर करते करते उसे उर्दू-ए-मुअगा बना दिया।

भारतेंदु युग में सामंतीय ढाँचा टूट चुका था। देश में एक सशक्त मध्यम वर्ग तैयार हो चुका था। जीवन के सभी क्षेत्रों में परिवर्तन एवं सुधार की आवश्यकता थी। इस युग में रचित गद्य-साहित्य की प्रत्येक विधा-नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना के समीक्षात्मक परिचय सांस्कृतिक जागरण के स्वरूप को उद्घाटित करते हैं।

(क) नाटककार एवं उनकी रचनाएँ-

हिन्दी नाटकों का आरंभ भारतेंदु हरिश्चंद से ही स्वीकार किया जाना चाहिए। इसके पूर्व जो कृतियाँ मिलती हैं चाहे प्राणचंद चौहान कृत 'रामायण महानाट्य' हो या महाराज विश्वनाथ -कृत 'आनंद रघुनंदन' सभी लगभग पद्यात्मक कृतियाँ हैं। अन्य नाट्यकृतियों में अमानत-कृत 'इंदरसभा' को भी गीति नाट्य होने के कारण नाटकों की परम्परा में नहीं जोड़ा जा सकता। भारतेंदु युग के सर्वश्रेष्ठ रचनाकार भारतेंदु हैं उन्होंने अनूदित और मौलिक सब मिलाकर सत्रह नाटकों की रचना की जो निम्नानुसार हैं- (1) विद्यासुंदर (1868, संस्कृत 'चौर पंचाशिका' के बांग्ला संस्करण का हिन्दी रूपान्तरण), (2) रत्नावली (1868, संस्कृत- हिंदी अनुवाद), (3) पाखंड- विडम्बन (1872, कृष्ण मिश्र के प्रबोध चंद्रोदय का हिन्दी अनुवाद),(4) धनंजय विजय (1872 संस्कृत नाटक का अनुवाद),(5) कर्पूर मंजरी (1875 सट्टक, संस्कृत कवि के नाटक का अनुवाद),(6) भारत जननी (1877, नाट्य गीत),(7) मुद्राराक्षस (1878, अनुवाद),(8) दुर्लभ बंधु (1880, मरचेंट ऑफ वेनिस का अनुवाद), (9) वैदिकी हिंसा न भवति (1873, प्रहसन), (10) सत्य हरिश्चंद्र(1875,), (11) श्री चंद्रवली (1876, नाटिका), (12) विषस्य विषमौषधम (1876, भाण), (13) भारत-दुर्दशा (1880, नाट्य रासक), (14) नीलदेवी (1881, गीति रूपक), (15) अंधेर नगरी (1881, प्रहसन), (16) सती-प्रताप (1883, गीति रूपक), (17) प्रेम जोगिनी (1875, नाटिका)।

विकासकाल से लेकर अब तक कविता की वह परम्परा भी चलती आ रही है जिसका वर्णन भक्तिकाल और रीतिकाल के भीतर हुआ है। भक्तिभाव के भजनों, राजवंश के ऐतिहासिक चरित काव्यों, अलंकार और नायिका भेद के ग्रंथों तथा शृंगार और वीररस के कवित्त, सवैया और दोहों की रचना बराबर होती आ रही है। नगरों के अतिरिक्त हमारे ग्रामों में भी न जाने कितने बहुत अच्छे कवि पुरानी परिपाटी के मिलेंगे। ब्रज भाषा काव्य की परम्परा गुजरात से लेकर बिहार तक और कुमायूँ से लेकर दक्षिण भारत की सीमा तक बराबर चलती आयी है। कश्मीर के किसी ग्राम के रहने वाले ब्रजभाषा के कवि का परिचय हमें जम्बू में किसी महाशय ने दिया था और शायद उनके दो-एक सवैये भी सुनाये थे।'' दूसरी धारा का नाम शुक्ल जी ने प्रथम उत्थान कहकर भी परिचय दिया है। इसका कार्यकाल उन्होंने संवत 1925 से 1950 माना। वे लिखते हैं -''इस नये रंग में सबसे ऊँचा स्वर देशभक्ति की वाणी का था। उसी से लगे हुए विषय लोकहित, समाज सुधार, मातृभाषा का उद्धार आदि थे। हास्य और विनोद के नये विषय भी इस काल में कविता को प्राप्त हुए। सारांश यह कि इस नयी धारा की कविता के भीतर जिस नये-नये विषयों के प्रतिविश्व आये, वे अपनी नवीनता से आकर्षित करने के अतिरिक्त नूतन परिस्थिति के साथ हमारे मनोविकारों का सामंजस्य भी घटित कर चले। कालचक्र के फेर से जिस नयी परिस्थिति के बीच हम पड़ जाते हैं, उसका सामना करने योग्य अपनी बुद्धि को बनाये बिना जैसे काम नहीं चल सकता, वैसे ही उसकी ओर अपनी रागात्मिका वृत्ति को उन्मुख किये बिना हमारा जीवन फीका, नीरस, शिथिल और असक्त रहता है।'' कहने का तात्पर्य यह कि शुक्ल जी ने उन सभी विषयों की ओर अपना ध्यान खींचा और भारतेंदु युग की काव्यधारा का परिचय हमारे सामने रखा। इस तरह भारतेंदु युग में निरन्तर परिवर्तन और नये अनुसंधानात्मक वृत्ति के साथ लेखन हुआ।

(ख) राष्ट्रीयता एवं सामाजिक चेतना- भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना का विकास उनके महापुरुषों के कृतित्व से हुआ। यह बोध हमें महाराणा प्रताप, शिवाजी, छत्रसाल आदि से प्राप्त होता है। इन्हीं को अपना आदर्श मानकर भूषण जैसे कवियों ने रचना की। भारतेंदु युगीन कवियों ने भारतीय इतिहास की गौरवशाली परम्पराओं की स्मृति तो अनेक बार दिलायी पर उनकी यह भावना यहीं तक सीमित नहीं रही। अंग्रेजी राज्य के सभी प्रकार के अपमानों, आहत भावनाओं को उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से ऊर्जान्वित किया। यही परम्परा आगे मैथिलीशरण में मिलती है। इनकी भारत-भारती जैसी कविताओं की प्रेरणा प्रताप नारायण मिश्र, भारतेंदु आदि से ही मिलती है। भारतेंदु ने उस समय की परिस्थिति पर लिखा है-

'भीतर-भीतर सब रस चूसै, हँसि-हँसि के तन-मन-धन मूसै।
जहिर बातन में अति तेल, क्यों सखि सज्जन! नहिं अंगरेज।।'

इकाई एक

भारतेंदु युग : प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ

प्रस्तावना